# पशुओ में प्रमुख संक्रामक बीमारिया


## डॉ संजीव कुमार डॉ कौशल कुमार डॉ राजेश कुमार

*विकृति विज्ञान विभाग बिहार पशुचिकित्सा महाविधालय, पटना-14*


पशुओं में अनेक प्रकार की बीमारियां होती हैं जिससे हमारे देश में काफी आर्थिक हानियॉ होती है। यह रोग मुख्यतः संक्रमित या बीमार पशु के सम्पर्क, मलमूत्र, दूषित मांस एवं संक्रमित उत्पादों के सेवन करने से होते हैं।

## न्युमोनिया

– अन्य नाम फुप्फुस दाह, फुप्फुसार्ति, फेफड़े का प्रदाह आदि।

**विशय परिचय**– यह पशुओं के फेफेड़ो का रोग हैं, जिसमें कि वायुनलियों तथा फेफड़ों का सूजन आकर पशु को श्वास कष्ट हो जाता हें । पशु को काफी तीव्र ज्वर आकर उस के मुॅह तथा नाक से पानी जैसा द्रव निकलता हैं। यदि रोग की भलीभॉति चिकित्सा न हो पाई, तो रोगी की कुछ ही दिनों में मृत्यु हो जाती हैं। इस बीमारी की निम्नलिखित तीन अवस्थायें हैं।–

1– उग्र शोथ, पालि शोथ या कफपाक शोथ

2– ब्रॉकोन्युमोनिया, पालिका शोथ, या श्लेष्म न्युमोनिया

3– अन्तरालीय, दीर्घ कालिक या फुप्फुप न्युमोनिया

**कारण** – इस रोग का जीवाणु न्युमोनोकोकाई है। सर्दी लगकर ही इसका प्रकोप हुआ करता हैं। कभी–कभी यह रोग किसी विशेष संक्रामक रोग के कारण हो जाता हें। फेफड़ों में चोट लगने, लापरवाही से पशु को दवा पिलाने तथा वायु नली में कुछ परजीवियों के रहने से भी यह रोग लग जाता हैं। इसके अतिरिक्त अचानक भीगना, ताप का एकाएक परिवर्तन होना तथा बुढ़ापा आदि कारण, जिससे कि पशु की बीमारी सहन करने की शक्ति क्षीण हो जाती हैं। इस रोग के फैलने में सहायक होते हैं।

**छूत लगने के ढंग**–

**भवास नली द्धारा** – रोग के कीटाणु श्वासनली द्धारा पशु के फेफड़ों में प्रवेश पाकर रोग फैलाते हैं।

**लक्षण** –

**उग्र भो**थ– पशु का तापक्रम बढ़ना, श्वांस कष्ट, तीव्र नाड़ी, फैलें हुए नथने , पहले पानी जैसा और बाद में श्लेष्मा मिश्रित पीप जैसा नाक से द्रव बहना, दांत पीसना, तथा पशु का रोग ग्रसित फेफड़े की ओर करवट से लोटना आदि, इस अवस्था के मुख्य लक्षण हैं। फेफड़े रक्त वर्ण होकर उन पर संघटित क्षेत्र हो जाते हैं। जो अंगुली द्धारा थपथपानें से भददी आवाज करते हैं। स्टेथॉस्कोप द्धारा अथवा फेफड़ों के स्थान पर कान रखकर सुनने से घरघराहट की आवाज आती हैं। जो रोग का वेग बढ़ने पर और अधिक तीव्र हो जाती हैं। फेफड़ों के पूर्ण रूप से संघटित हो जाने पर यह आवाज नहीं सुनाई देती ।

**ब्रोकोन्युमोनिया** – प्रारम्भ में खांसी, बाद में तीव्र ज्वर, वेगयुक्त नाड़ी, मुॅह खोल कर श्वांस लेना, नाक से गाढ़ा स्राव जुगाली न फेरना तथा भूख का न लगना आदि, इस अवस्था के प्रमुख लक्षण हैं। स्टेथॉस्कोप अथवा कान रखकर फेफड़ों की परीक्षा करने पर संघटित क्षेत्र महसूस होते हैं।

**दीर्घकालिक न्युमोनिया** – यह बहुधा उग्रशोथ अथवा ब्रोंकोन्युमोनिया होनेके बाद की अवस्था हैं।, जिसमें कि लक्षण धीरे धीरे प्रकट होकर काफी समय में समाप्त होते हैं। पशु को रूक रूक कर खांसी आकर श्वांसप्रश्वांस में कष्ट का

अनुभव होता हैं। ज्वर न रहकर नाड़ी की गाति क्षीण व अनियमित सी हो जाती है । फेफड़े के अन्तरालीय तन्तुमय ऊतक के बढ़ जाने के कारण, स्टेथॉस्कोप से सुनने पर सूखी आवाज सुनाई देती हैं।

**रोग का निदान**

**लक्षणानुसार** – बीमारी के मुख्य लक्षण देखकर तथा स्टेथॉस्कोप से फेफड़ों की असाधारणता का पता लगाकर रोग का निदान किया जाता हैं।

**चिकित्सा**– रोग की आशंका होने पर रोगी पशु को शुद्ध साफ एवं हवादार स्थान पर, अन्य पशुओं से अलग , बांधना चाहिए। उसको हलका पथ्य दिया जाय। न्यूमोनिया में दस्तावर तथा पिलाने वाली औषधियों का प्रयोग सर्वथा वर्जित है। अतः दवा अधिकतर चटनी अथवा इंजेक्शन के रूप में ही देनी चाहिए। कम्बल टाट या कपड़ा उढ़ाकर पशु के शरीर को गर्म रखना चाहिए। पशु के सीने पर लिनीमेंट या तारपीन के तेल की मालिश करके गर्म सेक करना काफी लाभप्रद है। दिन में दो तीन बार रोगी को, तारपीन या यूकलप्टिस के तेल को गर्म भाप निकलते हुए पानी की बाल्टी में डालकर वफारा देना चाहिए ।

## स्वाईनफ्लू

स्वाईनफ्लू स्वासनली की एक संक्रमक रोग हैं जो इन्सानों में सूकरों के द्धारा फैलता हैं। सन 2009 म ंयह महामारी के रूप में फैलने वाला सबसे घातक रोग हें। अभी पूरे देश में तथा भारत में कई मौतें हो चुकी हैं।

**कारण**– इसका मूल कारण विषाणु जिसे इफ्लुंजा टाईप A कहते हैं। इससे अभी तक तीन बार महामारी फैल चुकी हैं परन्तु 2009 में इसकी एक नयी प्रजाती H1N1 पूरे विश्व में महामारी फैल गयी थी

**रोग का फैलना**– सक्रमित रोगी के छीकने , खॉसने, बोलने से हवा के द्धारा दूसरो मे फैलता हैं बीमार सूकरों के करीब रहने वालें इन्सानों को जल्द संक्रमित करता हैं।

**लक्षण**– बुखार ,खासी , सरदर्द, जोड़ और मासपोसियों में दर्द ठंड,थकावट,नाक बहना,उल्टी और दस्त इसके मुख्य लक्षण हैं अधिकांशतः यह 65 साल के ऊपर और 5 वर्ष के नीचे के बच्चों को ग्रसित करता हैं इसके अलावा गर्भवती महिलाओं , बीमार इन्सानों को जल्दी फैलता हैं

**पहचान**– लक्षण तथा विशेष केन्द्रों पर जांच करवाने से ।

**इलाज एवम बचाव**– अभी तक इसका कोई ठोस इलाज संभव नहीं हैं । परन्तु रेलेन्जा एवम टैमीफ्लु दवा का उपयोग किया जाता हैं परन्तु इन दवाओं का उपयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिए । बीमारी के दो दिनों अन्दर इलाज जरूर शुरू कर दे ।

बचाव में प्रमुख बाते हैं-

1–सूकरों को ग्रसित न होने दे ।
2–इन्सानों को ग्रसित सूकरों से दूर रखना चाहिए
3– ग्रसित इन्सानों को सार्वजनिक जगह पर नहीं जाना चाहिए
4– स्वस्थ लोगों को ग्रसित रोगी से कम से कम 2 मीटर की दूरी बनायें रखना चाहिए।

## रैबीज

रैबीज रेवड़ो नामक विषाणु से फैलने वालो भयानक जानलेवा संक्रामक बीमारी है। संक्रमित कुत्तों के काटने पर लार के माध्यम से यह खतरनाक विषाणु मनुष्य या अन्य पशुओं के शरीर में पहुॅचते हैं।

**बीमारी के लक्षण**
**कुत्तों में**
**डम फार्म**

- निचले जबड़े की मांसपेशियों में पैरालाइसिस से जबड़ा नीचे लटका रहता है जिससे पशु मुंह नहीं बन्द कर पाता है।
- आंख लाल हो जाती है तथा आंख से आंसू गिरते रहता है।
- गले की मांस पेशियों में पैरालाइसिस के कारण आवाज बदल जाती है। कम आवाज के बीच भौंकने की तीखी आवाज आती है।
- किसी काल्पनिक चीज को पकड़ने के लिए भागता है।

**उग्ररूप (फुरियस फार्म)**

- अपने मालिक को नहीं पहचानता तथा आज्ञा का पालन नही करता है।
- आस–पास की चीजों को काटने का प्रयास करता है।
- चेहरे से काफी सचेत लगता है।
- पशु की उत्तेजना बढ़ जाती है और खाना पीना छोड़ देता है।
- अन्त में कुत्ता भौक नही पाता और जमीन पर गिर जाता है। लकवा एवं सांस में तकलीफ के कारण 10 दिन के अन्दर ही कुत्ते की मौत हो जाती है।

**गाय और भैस में**

- पशु हमेशा सचेत अवस्था में रहता है तथा कान आगे तने हुए रहते हैं।
- मुंह से लार गिरता है तथा मुंह को खुला रखती है।
- पैर में लड़खड़ाहट आ जाती है।
- नर व मादा पशुओं में उत्तेजना बढ़ जाती है।
- ये लक्षण 1–3 दिन रहता है तथा बाद में लकवा के कारण पशु की मौत हो जाती है।

मनुष्य में यह रोगग्रस्त पशुओं के काटने के कारण लार में सम्पर्क में आने से होता है। पशु में संक्रमण होने पर काटने के स्थान पर झनझनाहट महसूस होता है। हल्का बुखार, सिर दर्द, अधिक संवेदनशील, मांसपेशियों में अकड़न जैसे लक्षण दिखता है। अन्त में गले एवं सांस की मांसपेशियों में ऐंठन से खाना पीना नहीं निगल पाते तथा सांस में भारी तकलीफ के कारण मौत हो जाती है।

**बचाव के उपाय**

- इस रोग के होने के बाद कोई इलाज नहीं है।
- लावारिस कुत्तों से सावधान रहना चाहिए।
- पालतू कुत्तों का समय–समय पर रैबीज विरोधी टीकाकरण करना चाहिए।
- रोग का संदेह होने पर पशुओं को तुरन्त स्वस्थ पशु से अलग रखना चाहिए तथा उसका देखभाल सावधानीपूर्वक करना चाहिए एंव नजदीक के पशु चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए।
- रैबीज ग्रस्त पशु द्वारा अन्य पशुओं एवं मनुष्यों को काटने पर तुरन्त चिकित्सक के सलाह पर टीका लगवाना चाहिए।

# क्षय रोग (ट्यूबरक्यूलोसिस)

क्षय रोग मनुष्यों और पशुओं में होने वाला खतरनाक बीमारी है। यह बीमारी माइकोवैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक जीवाणु के कारण अधिक फैलता है। ये बीमारी लगभग सभी पशुओं में पाया जाता है। लेकिन गाय, भैसों में अधिक पाया जाता है। ये जीवाण शरीर के किसी भी भाग में आसानी से पहुँच जाते हैं और वहां तीव्र गति से अपनी संख्या बढ़ाने लगते हैं। जिस भाग में जीवाणु स्थायी रूप से बढ़ जाते हैं वहां गोल गाठें सी बन जाती है।

**रोग के लक्षण**

- गाय–भैस में जीवाणु के संक्रमण के कुछ महीने बाद लक्षण प्रकट होता है।
- रोगी पशु में हल्का बुखार रहता है।
- पौष्टिक आहार के बावजूद पशु का वजन धीरे–धीरे कम होने लगता है, और पशु कमजोर हो जाता है।

- सांस लेने में तकलीफ होती है और सांस की गति बढ़ जाती है तथा पीड़ा के साथ सूखी खासी आती है।
- जब पाचन नली में रोग के लक्षण प्रकट होते हैं तो पेट में दर्द होता है। दस्त तथा हल्की टिम्पेनी रहती है। गोबर के ऊपर चिकनी म्यूकस चिपकी रहती है।
- जब थन में रोग का लक्षण आता है तो थन में छोटी–छोटी गॉठें बन जाती है तथा सूजन भी आ जाती है। दुग्ध उत्पादन कम होने लगता है और धीरे–धीरे कम होकर बन्द हो जाता है।
- गर्भाशय तक रोग फैलने पर मवाद बाहर निकलती है, जिसमें थोड़ा रक्त भी मिला होता है। इससे मादा चक्र गड़बड़ा जाती है।
- जब तंत्रिका तंत्र प्रभावित होता है, तो आंख की रोशनी कम या बन्द हो जाती है। चलने में लड़खड़ापन रहता है। मिर्गी जैसा दौरा पड़ता है तथा कभी–कभी पशु गोल घेरे में घूमता है।

रोग ग्रस्त पशु की सांस, नाक से निकलने वाले स्राव, कफ, दूध, मल–मूत्र आदि के सम्पर्क में आने से मनुष्य इसके चपेट में आ जाते हैं। विश्व में भारत उन तीन चार देशों में शामिल है जहां टी0बी0 के रोगियों की संख्या सर्वाधिक है। यहां प्रतिवर्ष लगभग 25 लाख लोग इस रोग कारण मौत के शिकार हो जाते हैं। भारतीय लोगों में टी0बी0 रोग के इस विकराल रूप में गायों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

**बचाव के उपाय**

- पशुओं में भी इस रोग में मनुष्यों की तरह इलाज किया जाता है जो काफी मंहगा पड़ता है।
- शुरूवाती अवस्था में स्ट्रेप्टोमाइसिन, इसोनेक्स, इसोकेडीपास आदि दवा तथा पौष्टिक खुराक देने से लाभ होता है।
- पशुओं में टी0बी0 का शक होने पर ट्यूबरकुलीन जॉच करना चाहिए और यदि संभव हो तो स्लाटर कर देना चाहिए।
- रोगग्रस्त पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- नये पशु खरीदने से पहले टी0बी0 रोग की जांच करवा लेना चाहिए।
- बछड़े–बछड़ियों में बी0सी0जी0 का टीका लगवाना चाहिए।
- रोगग्रस्त पशुओं का दूध एवं अन्य पदार्थ मनुष्यों को नहीं खाना चाहिए।

# तिल्ली बुखार (एन्थैक्स)

एन्थैक्स वैसिलस एन्थ्रासिस नामक जीवाणु से होने वाला एकाएक तेजी से तथा लम्बे क्षेत्र में फैलने वाला संक्रामक रोग है। यह विशेषकर गाय–भैस और भेड़ों में पाया जाता है। इस रोग में सेप्टीसीमिया के कारण अचानक पशु की मौत हो जाती है तथा नाक, मुंह एवं गुदा से रक्त निकलता है। इस बीमारी में तिल्ली का आकार काफी बड़ा हो जाता है। इसलिए इसे तिल्ली बुखार भी कहा जता है।

**बीमारी के लक्षण**

- पशुओं में अचानक तेज बुखार ($104^0$–$108^0$ फॉरेनहाइट) आता है।
- पशु चारा खाना छोड़ देता है।
- पशु काफी सुस्त हो जाता है।
- श्वास एवं हदय गति बढ़ जाती है।
- पेट में गैस बनता है।
- श्वास लेने में कठिनाई होती है।
- दुग्ध में रक्त आता है।
- गाभिन पशुओं में गर्भपात हो सकता है।
- जीभ, गला, सीना तथा पैरों में सूजन आ जाती है।
- रोगी पशु का 2–3 दिन में मोत हो जाती है।

- एन्थैक्स के बहुत तेज प्रकोप होने पर पशु की अचानक मौत हो जाती है।

एन्थैक्स पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाला एक जानलेवा रोग है। मनुष्य में इस रोग के जीवाणु से दूषित खाल, ऊन, मांस, हड्डियों, रक्त आदि के सम्पर्क में आने से होता है। मनुष्य में यह रोग होने पर त्वचा, फेफड़ों एवं आंतों में रोग के लक्षण प्रकट होते हैं। हाथ, सिर, गर्दन पर विषैली फुंसियां बन जाती हैं। इसके अलावा ऊन के सम्पर्क में आने वालों के फेफड़ों में लक्षण प्रकट होते हैं।

**बचाव के उपाय**

- संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशु से अलग रखें।
- पशु के रहने की जगह को पूरी तरह स्वच्छ रखें।
- एन्थैक्स रोग से मरने वाले पशु के शरीर को जमीन में गाड़ दें अथवा जला दें।
- दूषित चारा पानी को स्वस्थ पशु के सम्पर्क में नही लाना चाहिए।
- प्रविर्ष मई–जून माह में इसका टीकाकरण करवायें, इससे एक वर्ष तक रोगप्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है।

# संक्रमित गर्भपात (ब्रूसेल्लोसिस)

यह रोग ब्रूसेला एबोरेटस नामक जीवाणु के कारण होता है। भारत में प्रतिवर्ष लगभग 25 लाख पशुओं में इस रोग से गर्भपात होता है जिससे बहुत आर्थिक नुकसान होता है। एक बार गर्भपात होने पर  पर गाय भैंस की प्रजनन क्षमता एक चौथाई कम हो जाती है। भारतवर्ष मे लगभग 8 प्रतिशत गायें तथा 6 प्रतिशत भैंसे इस रोग से ग्रसित रहती हैं। यह रोग प्रायः दूषित आहार, पानी तथा योनि स्राव के द्वारा फैलता है। यह रोग त्वचा के घाव, ऑखों की झिल्ल थन तथा संक्रमित सांड़ से गर्भाधान के कारण भी फैलता है।

**रोग के लक्षण**

- गर्भपात गर्भ के 6 माह के आस–पास होता है तथा गर्भपात में भूरा सफेद रंग का मवाद जैसा स्राव योनि मार्ग से बाहर निकलता है।
- गर्भपात से पूर्व गाय ब्याने से पहले जैसा शारीरिक लक्षण प्रकट कर सकती है।
- ब्रूसेल्लोसिस के कारण होने वाले गर्भपात से जड़ (प्लेसेन्टा) नहीं गिरता है।
- पैरों के जोड़ों पर सूजन आ जाती है।
- नर पशु के अंड कोषों में सूजन आ जाता है तथा प्रजनन क्षमता काफी कम हो जाता है।
- एक बार गर्भपात हो जाने पर ब्रुसेल्ला जीवाणु शरीर में सुसुप्ता अवस्था में पड़े रहते हैं तथा अगली बार पुनः गर्भधारण करने पर गर्भपात होने की सम्भावना बनी रहती है।

मनुश्य के शरीर में ये जीवणु दूषित दूध, मांस तथा मल–मूत्र आदि के माध्यम से फैलता है। मनुष्य में इसे अंडुलेन्ट फीवर या माल्टा फीवर कहते हैं। मनुष्य के शरीर में इसके जीवणु प्रवेश करने के कुछ ही दिन बाद रोग के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। शुरू में रोगी को तेज बुखार आता है, ठंड लगती है तथा सिर, पीठ एवं जोड़ों में दर्द रहता है। रोगी को भूख कम लगती है तथा रात में पसीना आता है। यह स्थिति लगभग महीने तक रहती है जिससे रोगी काफी कमजोर हो जाता है। बाद में अंडकोषों में सूजन आ जाती है। रोगी हमेशा के लिए नपुंसक हो सकता है।

**बचाव के उपाय**

- 4 माह से अधिक के सभी पशुओं का टीकाकरण करना चाहिए ताकि पशुओं में ब्रूसेल्लोसिस नहीं हो।
- कृतिम गर्भाधान का तरीका अपनाना चाहिए।
- गर्भपात से निकलने वाले भ्रूण, प्लेसेन्टा स्राव आदि को जला देना चाहिए।
- संक्रमित पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- गर्भपात के बाद सफाई करने वाले व्यक्तियों को पूरी सावधानी रखनी चाहिए ताकि मनुष्यों में न फैले।
- हाथों में बिना दस्ताने पहने गर्भाशय से प्लेसेन्टा बाहर नहीं निकालें।
- जेर बाहर निकलते समय नाक एवं मुह पर मास्क या रूमाल बांधे तथा आखों पर चश्मा लगायें।
- जड़ निकालने के बाद हाथ, मुंह अच्छी तरह एन्टीसेप्टिक घोल से धोएं।